



पहले चरण में खेत की जुताई के लिये गहरी जुताई का उपयोग किया जाता है।

जुताई, मिट्टी के बेलों की कटाई, बेलों की तुड़ाई तथा मिट्टी को अलट-पलट करने से काफी हद तक या कुछ हद तक पौध रोपण के लिए खेत की तैयारी हो जाती है। गहरा जुताई से कृषकों को एक अच्छे संरचना वाली खेती योग्य भूमि मिल जाती है जिससे की पानी को सोखने की क्षमता के साथ भूमि में ऑक्सीजन का सुगम परिचालन हो जाता है। इसके अलावा जुताई से खरपतवार, कीट पतंगा का भी नाश हो जाता है। किसानों के लिए बाजार में जुताई के लिए विभिन्न प्रकार के मशीन मौजूद हैं लेकिन स्टिल कंपनी ने पावर बीडर रू॥ (710) अलग- अलग जुताई के पुर्जों के साथ वर्णित प्रकियाओं को आसान बनाने में किसानों मदद करता है। हैरोइंग एक उथली-गहराई वाली माध्यमिक जुताई तकनीक है जो मिट्टी को महीन और चूर्ण करने के साथ-

A group of women are working in a flooded rice field. They are bent over, planting young rice seedlings into the water. The field is filled with green rice plants, and the water is shallow. The women are wearing traditional headscarves and long-sleeved clothing. The background shows a vast expanse of green rice fields under a clear sky.



इस मौसम में धान की बेहतर उपज प्राप्त करने के लिए स्टिल के कृषि उपकरणों का उपयोग करें। अधिक जानकारी के लिए आप उनके आधिकारिक वेबसाइट पर जाएं तथा उनके ऑफिशियल Id:info@stihl.in, संपर्क सूत्र- 9028411222 का उपयोग अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए कर सकते हैं।

पूरी प्रक्रिया अत्यंत उबाऊ और जटिल होती है। इसके लिए स्टिल कंपनी पावर वीडर रु॥ (710) के साथ पोडलिंग स्वील अटैचमेंट एक अत्यंत आधुनिक पेशकश है। जिससे ना केवल धान के पौध रोपण के लिए खेत तैयार होती है बल्कि पौध रोपण के लिए उपयुक्त भूमि भी तैयार हो जाती है। ऐसा माना जाता है कि भूमि को समतल बनाने से ना केवल भूमि की उपयोगिता बढ़ती है बल्कि भूमि के समतल करने से, भूमि के सिंचाई के दौरान पानी की कम खपत होती है तथा एक सार मानी पूरे खेत में फैल जाता है। इस प्रक्रिया को अपनाते से ना केवल पानी के बहाव और फैलाव को नियंत्रित किया जाता है बल्कि इससे भूमि का कटाव भी रुकता है और इसके साथ-साथ पौध प्रस्थापना भी बेहतर होती है।

A close-up photograph of a large bunch of ripe bananas hanging from a tree. The bananas are bright yellow with some green at the stems, indicating they are ready to eat. They are clustered together, and the background shows green leaves and a wooden support structure.

सामान्य तौर पर किसान पारंपरिक तरीके से फेले की खेती करते हैं, अगर वे वैज्ञानिक तरीका अपनाएं तो उन्हें काफी फायदा हो सकता है, उनकी कमाई तीन गुना तक बढ़ सकती है, फेले की खेती के लिए अभी है सही समय, वैज्ञानिक विधि अपनाकर किसान कर सकते हैं अधिक कमाई वैज्ञानिक विधि से फेले

अब इसके लिए जगज्जुक्त मौसम आ रहा है. देश में हरके प्रदेश और भौगोलिक दशा के लिए केले की प्रजाति मौजूब है. ऐसे में यह जानना जरूरी है कि किसान वैज्ञानिक विधि अपनाकर किन किस्मों की खेती कर अधिक से अधिक पैदावार लें. फल वैज्ञानिक डॉ. एसके सिंह

प्रकन्द का औसत वजन लगभग एक से डेढ़ किलोग्राम होना चाहिए. सकर की खुदाई और उसकी सफाई के बाद उसका कार्बोहाइड्रेट (0.1 प्रतिशत) मोनोक्रोटोफास (0.2 प्रतिशत) के जलीय घोल में 90 मिनट तक डालकर शोधन करते हैं. इसके बाद सकर को 7 दिन तक धूप में रखकर उसके जीवाणु या फफूंद विहीन कर देते हैं. जहां सूत्रकृमि की समस्या हो. वहां पर सकर को गाय के गोबर में डुबोने के पश्चात नीम आधारित कीटनाशक से शोधन के पश्चात नीम की खली प्रति 2-3 किलोग्राम या गन्ना प्रयोग करना चाहिए. रोपण हेतु सकर के चयन में विशेष सावधानी बरतनी चाहिए. क्योंकि रोपण सप्ताह के समान नहीं होने की वजह से केला की फसल को एक समान नहीं होती है, जिससे उसकी कटाई के समय में भारी अंतर आता है और फसल का प्रबंधन कठिन हो जाता है.

जल्द बहुत अधिक पौधे तैयार करने के लिए पूरा प्रकन्द या इसके टुकड़े काटकर प्रयोग में लाते हैं. इनसे पौधा बनने में थोड़ा अधिक समय अवश्य लगता है परन्तु पहली फसल के पौधे अधिक समरूप होते हैं.



रोपण के दौरान पौधे से पौधा एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी विभिन्न कारकों द्वारा प्रभावित होती है जैसे, केला की किस्म, खेती करने की विधि, मुदा की ज्वरता इत्यादि, केला की परंपरागत खेती में विभिन्न किस्मों के लिए रोपण की दूरी भी भिन्न-भिन्न निर्धारित की गई है जो इस प्रकार है।

